शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में गरीबी के कारण, प्रभाव एवं निवारण : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

कु. अर्चना आर्य (शोधार्थी)
अर्थशास्त्र
माता जीजा बाई शासकीय कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय
इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

21वीं सदी का सहस्त्राब्दि विकास लक्ष्य एवं भारत को विकसित दे श बनाने के सपने को साकार करने के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा निर्धनता है। सामान्यतः जीवन स्वास्थ्य तथा दक्षता के लिए न्यूनतम उपभोग की आव श्यकताओं को प्राप्त करने की असमर्थता को गरीबी कहते है। भारत में गरीबी हमेशा से ही मूलभूत समस्या रही है और समय-समय पर सरकार द्वारा गरीबी दूर करने के उपाय भी किये हैं। भारत ही नहीं विश्व के सभी अल्प-विकसित या विकासशील देशों में जहाँ प्रति व्यक्ति आय बहुत कम है तथा आय की असमानताओं और बेरोजगारी ने कई बुराईयों को जन्म दिया है, जिसमें से सर्वाधिक गंभीर समस्या गरीबी है। भारत की अधिकांश आबादी आज भी भरपेट खाना नहीं खा पाती है। गरीबी वह स्थिति है जिसमें समाज का एक भाग जीवन की बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करने में असमर्थ रहता है।

प्रस्तावना

गरीबी अथवा निर्धनता का अर्थ उस स्थिति से है, जिसमें समाज का एक भाग अपने जीवन की बुनियादी आव श्यकताओं को संतुष्ट करने में असमर्थ रहता है। भारत में गरीबी तय करने के लिये अनेक मापदण्ड विवादित बने हुए है। गरीबों की संख्या को लेकर योजना एवं विभिन्न संगठनों के समंकों में बहुत अंतर है। योजना आयोग द्वारा गठित विषेषज्ञ दल Task Force on Minimum Needs and Effective consumption Demand की रिपोर्ट के अनुसार ग्रामीण क्षेत्र में प्रति व्यक्ति 2400 कैलोरी प्रतिदिन तथा शहरी क्षेत्र में प्रति व्यक्ति 2100 कैलोरी प्रतिदिन के हिसाब भोजन जिन्हें प्राप्त नहीं हो पाता , उसे गरीबी रेखा से नीचे माना जाता है।

योजना आयोग के आंकड़ों के अनुसार शहरी क्षेत्रों में 26 रु. प्रतिदिन एवं ग्रामीण क्षेत्र में 21 रु. प्रतिदिन से कम मजदूरी पाने वाले व्यक्ति गरीबी रेखा के नीचे माने जाते है। देश में समय-समय पर गरीबी रेखा को निर्धारित करने वाले विभिन्न फार्मूलों के मध्य मतभिन्नता रही है। पी.एस. मिन्हस, वैद्यनाथ, पाण्डेकर एवं पी.के. वर्द्धन , एम.एस. अहलूवालिया एवं वर्तमान सुरे श तेन्दुलकर तथा डा. सी. रंगराजन आदि समितियों ने देश में गरीबी रेखा निर्धारण की अपनी-अपनी अवधारणाएं दी हैं।

उद्देश्य - देश के ग्रामीण क्षेत्र में गरीबी के कारण, प्रभाव एवं निवारण का अध्ययन।

शोध परिकल्पना - 1. गरीबी निवारण के लिए वातावरण निर्माण के हम असफल हुए हैं।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

2. गरीबी रेखा निर्धारण में स्थानीय परिस्थितियों की उपेक्षा की गई है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध में प्रकाशित द्वितीयक समंकों का प्रयोग करते हुए उनका समीक्षात्मक अध्ययन किया गया है।

गरीबी की स्थिति

देश में निर्धनों की जनसंख्या के संदर्भ में ताजा आंकड़ों में निर्धनता के मापन हेतु विधि की पुनरीक्षा हेतु विषेषज्ञ समूह 2014 (अध्यक्ष डा. सी. रंगराजन सदस्य - डा. एस. महेन्द्र देव , डा. के. सुन्दरम, महेश व्यास, के.एल. दत्ता)

देश में प्रारंभ से लेकर अब तक ग्रामीण निर्धनता की स्थिति में व्यापक परिवर्तन होते रहे हैं, जिसका प्रतिकूल प्रभाव लोगों के जीवन स्तर पर पड़ा है। देश में ग्रामीण निर्धनता की स्थिति को निम्न सारणी द्वारा स्पष्ट रुप से देखा जा सकता है।

देश में ग्रामीण निर्धनता

वर्ष	ग्रामीण निर्धनता (प्रतिशत में)
1993-94	50.1
2004-05	41.8
2009-10	33.8
2011-12	30.9

गरीबी के कारण

देश में गरीबी के कई मुख्य कारक हैं, जिसके कारण व्यक्ति अपना पूर्ण विकास नहीं कर पाता है। जिन्हें निम्न तथ्यों के आधार पर स्पष्ट किया जा सकता है। शिक्षा और जागरूकता की कमी से प्रत्येक व्यक्ति अपना आर्थिक विकास नहीं कर पाता तथा गरीबी के कारण अपनी स्वस्थ्य मानसिकता का विकास नहीं कर पाता। भारतीय समाज में व्याप्त जातिगत व्यवस्था , कई सामाजिक कुप्रथा जैसे - साहूकारी, जमींदारी प्रथा, विवाह में आय से अधिक व्यय करना , झूठी प्रतिष्ठा आदि व्यक्ति और दे श की आर्थिक प्रगति में बाधक हैं। भारत की बढ़ती जनसंख्या , पूंजी की कमी, अविकसित व्यवसाय, मानवीय तथा प्राकृतिक संसाधन का अपूर्ण विदोहन, ग्रामीण क्षेत्र में बढ़ती बेरोजगारी भी गरीबी का एक कारण है। अवसरों की असमानता और भ्रष्टाचार के कारण योग्य व्यक्ति को योग्य स्थान नहीं मिल पाता , जिससे वह आर्थिक रूप से पिछड़ता चला जाता है। वहीं देश में प्रशासनिक शिथिलता भी गरीबी का एक कारण है, क्योंकि गरीबी निवारण संबंधित केन्द्री और राज्य सरकार योजनाओं का पूर्ण लाभ हितग्राहियों को नहीं मिल पाता है। ग्रामीण क्षेत्र के लोग अधिकांश रूप से खेती तथा मजदूरी कर अपना जीवन बिताते हैं। इन मुख्य कारणों के साथ-साथ खेती की कम उत्पादकता व मजदूरी का निम्न स्तर भी इनकी गरीबी का मुख्य कारण है।

गरीबी का प्रभाव

देश में बढ़ती गरीबी का स्तर चिन्ता का एक विषय है। गरीबी के कारण व्यक्ति अपना पूर्ण विकास नहीं कर पाता है। निर्धनता दे श की आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक व्यवस्था को प्रत्यक्ष रुप से प्रभावित करती है। भारत में अशिक्षितों व जागरुकता की कमी से वह परिवार नियोजन को नहीं अपनाता , जिससे जनसंख्या में तेजी से वृद्धि हो रही है, वहीं गरीबी व अवसर की असमानता भ्रष्टाचार से समाज में अपराधी प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है , निर्धनता के कारण बच्चों में कुपोषण एवं व्यक्तियों का निम्न जीवन स्तर पाया जाता है , जिसका उनकी मानसिक सोच तथा शारीरिक क्षमता पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। गरीबी के कारण व्यक्ति की आय कम होती है, जिससे उसकी व्यय क्षमता में भी कमी होती है जो बाजार उद्योग प्रति व्यक्ति

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

आय, राष्ट्रीय आय , पूँजी निर्माण आदि पर विपरीत प्रभाव पड़ता है और इसका प्रभाव संपूर्ण अर्थव्यवस्था पर पड़ता है। गरीबी निवारण तथा भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास हेतु इण्डिया विजन 2020 के अनुसार कुछ लक्ष्य रखे गये हैं, जिन्हें अच्छे प्रयासों से और उचित क्रियान्वयन से प्राप्त किया जा सकता है।

तालिका क्र. 2 इण्डिया विजन 2020 के महत्वपूर्ण लक्ष्य

क्र	इण्डिया विजन 2020 के लक्ष्य	2000-2001 की स्थिति	2020 की संभावना
1	गरीबी रेखा से नीचे की आबादी	26%	13%
2	बेरोजगारी की दर	7.3%	6.8%
3	कृषि से रोजगार	56%	40%
4	वयस्क पुरुष साक्षरता	68%	96%
5	वयस्क महिला साक्षरता	44%	94%
6	शिक्षा पर खर्च (G.D.P का %)	3.2%	4.9%
7	जीवन प्रत्या शा (जनम के समान)	64 वर्ष	69 वर्ष
8	5 वर्ष से कम आयु के बच्चों में कुपोषण	45%	8%
9	वार्षिक वृद्धि दर (G.D.P का %)	4.4%	9.0%
10	कुल जनसंख्या में शहरी जनसंख्या का %	25.5%	40.0%

स्रोत - प्रतियोगिता दर्पण, सामान्य अध्ययन, भारतीय अर्थव्यवस्था संस्करण, 2014-15

गरीबी निवारण के सुझाव

प्रथम पंचवर्षीय योजना से लेकर आज तक कई गरीबी निवारण हेतु बहुआयामी कार्यक्रम एवं गरीबी हटाओ जैसे नारों क साथ सरकार भरपूर कोशिश करती हुई दिखाई देती है , लेकिन इन योजनाओं का सही तरीके से क्रियान्वयन करना होगा, ताकि योजना का लाभ सही लोगों को मिल सके, ग्रामीण क्षेत्र के लघु एवं कुटीर उद्योगों के साथ कृषि वानिकी , पशुपालन तथा सहायक उद्योगों को भी बढ़ावा देना चाहिए। ग्रामीण क्षेत्र के विकास हेतु सार्वजनिक काम तेजी से शुरु किया जाना चाहिए , गरीबी को कम अथवा दूर करने के लिए शिक्षा प्रसार एवं जनसंख्या नियंत्रण कार्यक्रमों का प्रसार अधिकां श रूप से किया जाना चाहिए तथा जन शक्ति नियोजन , कृषि आधारित उद्योगों का विकास , प्राकृतिक संसाधनों का उचित दोहन , पूंजी निर्माण में वृद्धि समान अवसर को अपलब्धता , सामाजिक सेवाओं का विस्तार आदि उपायों द्वारा गरीबी को नियंत्रित किया जा सकता है।

अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि गरीबी हमारे संवैधानिक , न्यायिक, राजनैतिक, आर्थिक एवं सामाजिक अतिरंजनाओं की एक विषम उपज है। सही दि शा में प्रयास और उचित संचालन तथा वास्तविक क्रियान्वयन से इसका निदान संभव है।

संदर्भ ग्रंथ

1. *डॉ. रेणु त्रिपाठी , ग्रामीण विकास और निर्धनता उन्मूलन, ओमेगा पब्लिकेशन, दिल्ली 2011*
2. *रुद्रदत्त, के.पी. सुन्दरम, भारतीय अर्थव्यवस्था, एस. चन्द्र एण्ड कं.लि. नई दिल्ली 2010*
3. *आर्थिक समीक्षा - 2013-14*
4. *भारतीय अर्थव्यवस्था एवं प्रतियोगिता दर्पण वार्षिकी*
5. *भारतीय आर्थिक नीति , डॉ.. पी.डी. माहे श्वरी, डॉ..शीलचंद गुप्ता, कैलाश पुस्तक सदान, भोपाल।*